1.

Shiv Sankalap Sukta

शिवसंकल्पसूक्त (कल्याणसूक्त)

Gurudev Raj Verma

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

मनुष्य के कर्म–अकर्म का मुख्य यंत्र मन ही है। वही जीव के सुख और दुःख का मूल कारण है। मनुष्य के शरीर की इन्द्रियों में मन का महत्व सर्वोपरि है; क्योंकि मन सभी का नियंत्रण करने वाला, विलक्षण शक्तिसम्पन्न और सर्वाधिक प्रभावशाली है। मन की गति सर्वत्र है, सभी कर्मेन्द्रियां, ज्ञानेन्द्रियां और सुख–दुःख मन के ही आधीन है। मन को जीतना अत्यन्त दुष्कर कार्य है, मन को वश में बिना करे मनुष्य किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। मन जिसके वश में हैं, समस्त देवता उसके वश में है।

योगसाधना, ध्यानसाधना एवं मंत्रसाधना के लिये मन की एकाग्रता परम आवश्यक है। जिस प्रकार लोहे से लोहे को काटा जाता है। वैसे ही मन से मन को पकड़ा जा सकता है, पर यह तभी सम्भव है, जब जीव पर ईश्वर कृपा हो है। जिन साधकों का साधना में मन एकाग्र नहीं होता, मन की अस्थिरता के कारण अनुष्ठान सम्पन्न नहीं हो पाते, साधना में मन नहीं लगता; उन साधकों का अपने नित्य पूजन में इस प्रार्थनामय सूक्त का स्नेहपूर्वक पाठ करना चाहिये। इसके सुप्रभाव से मनुष्य का मन स्थिर होता है, संकल्प पूर्ण सिद्ध होते हैं और ईश्वर सम्बन्धी कार्यों में रुचि उत्पन्न होती है। सर्वप्रथम शुभ काल में 108 आवृत्ति कर, नित्य पूजन में पाठ करने से अति शुभ फल प्राप्त होता है।

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com

सूक्त :- जो जागते हुए पुरुष का मन दूर चला जाता है और सोते हुए पुरुष का मन वैसे ही निकट आ जाता है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का प्रधान साधन है; जो भूत, भविष्य, वर्तमान, संनिकृष्ट एवं व्यवहित पदार्थों का एक मात्र ज्ञाता है तथा जो विषयों का ज्ञान प्राप्त करने वाले श्रोत्र आदि इन्द्रियों का एकमात्र प्रकाशक और प्रर्वतक है, मेरा वह मन कल्याणकारी भगवत् सम्बन्धी संकल्प से युक्त हो।1।

कर्मनिष्ठ एवं धीर विद्वान जिसके द्वारा यज्ञिय पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके यज्ञ में कर्मो का विस्तार करते हैं, जो इन्द्रियों का पूर्वज अथवा आत्मस्वरूप है, जो पूज्य है और समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, मेरा वह मन कल्याणकारी भगवत् सम्बन्धी संकल्प से युक्त हो।2।

जो विशेष प्रकार के ज्ञान का कारण है, जो सामान्य ज्ञान का कारण है, जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रहकर उनकी समस्त इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो स्थूल शरीर की मृत्यु होने पर भी अमर रहता है और जिसके बिना कोई भी कर्म नहीं किया जा सकता, मेरा वह मन कल्याणकारी भगवत् सम्बन्धी संकल्प से युक्त हो।3।

जिस अमृतस्वरूप मन के द्वारा भूत, वर्तमान और भविष्यत् सम्बन्धी सभी वस्तुएं ग्रहण की जाती हैं तथा जिसके द्वारा सात होता वाला अग्निष्टोम यज्ञ सम्पन्न होता है, मेरा वह मन कल्याणकारी भगवत् सम्बन्धी संकल्प से युक्त हो।4।

जिस मन में रथ चक्र की नाभि में अरों के समान ऋग्वेद और सामवेद प्रतिष्ठित हैं तथा जिसमें यजुर्वेद प्रतिष्ठित है, जिसमें प्रजा का सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओतप्रोत है, मेरा वह मन कल्याणकारी भगवत् सम्बन्धी संकल्प से युक्त हो।5।

श्रेष्ठ सारथि जैसे घोड़ों का संचालन और रास के द्वारा घोड़ों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही जो प्राणियों का संचालन तथा नियंत्रण करने वाला है, जो हृदय में रहता है, जो कभी बूढ़ा नहीं होता और जो अत्यन्त वेगवान है, मेरा वह मन कल्याणकारी भगवत् सम्बन्धी संकल्प से युक्त हो।6। (शुक्लयजुर्वेद)

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

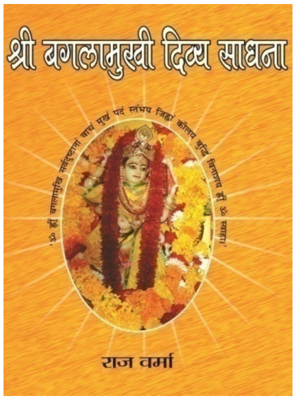

Shri Raj Verma ji
Mob +91-9897507933,+91-7500292413
Email - mahakalshakti@gmail.com